4

प्रभावी शिक्षण के लिए संप्रेषण कौशल

उषा शुक्ला*

कक्षागत अंतःक्रिया में अधिगम का एक बहुत बड़ा अंश आज भी भले ही वैयक्तिक न हो, किंतु व्यक्ति आधारित अवश्य है। परंपरागत रूप में यह अंश शिक्षक के द्वारा संप्रेषित किया जाता है। किंतु वर्तमान संदर्भ में आज यदि संप्रेषण की तकनीक को समझकर उसका उपयोग किया जाए तो बच्चों के लिए केवल शिक्षक ही नहीं वरन् साथी, समुदाय एवं अन्य व्यक्तियों के साथ किया गया संपर्क-संवाद सीखने की अनंत संभावनाओं के द्वार खोल सकता है। संप्रेषण की सार्थकता न केवल संवाद को प्रभावी बनाती है, बल्कि हस्तांतरित किए गए ज्ञान को चिरकाल तक स्थायी बनाने में अहम भूमिका भी निभाती है। प्रस्तुत लेख कक्षा-शिक्षण में संप्रेषण की भूमिका को बताता है।

कक्षा-शिक्षण में संप्रेषण की भूमिका

शिक्षक-प्रशिक्षकों एवं छात्राध्यापकों में संप्रेषण दक्षता के विकास के लिए एक समन्वित प्रारूप विकसित करना आवश्यक है जिसके अंतर्गत ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति और संबंधित व्यवहारों का सुधारात्मक प्रयास अपेक्षित है। जिसके लिए उच्चारण, शब्द-चयन, प्रवाह, आवश्यक विराम, उतार-चढ़ाव, स्वर, प्रसन्नता, हावभाव, संकेत, बैठने या खड़े होने के ढंग, नवीन तकनीक के प्रयोग का अभ्यास करना आवश्यक है।

कक्षा में संप्रेषण की स्थितियाँ

शिक्षण, विद्यार्थियों में अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन लाने की प्रक्रिया है। आज का अध्यापन केवल सूचना अदायगी नहीं रहा, वरन एक आनंददायी माहौल में जीवन हेतु शिक्षा उपलब्ध कराने की प्रक्रिया है। इस

शाब्दिक

अशाब्दिक

कायिक/सांकेतिक

प्रक्रिया के माध्यम से न केवल भावी पीढ़ी को ज्ञान से संपन्न किया जाता है वरन् सामाजिकता, चारित्रिक विकास और सर्वतोन्मुखी प्रतिभा से परिपूर्ण करने के लिए आवश्यक प्रयास भी किए जाते हैं। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कक्षा-कक्ष में शिक्षक एवं विद्यार्थी की पारस्परिक अंतःक्रिया का विशेष महत्त्व है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* के अनुसार रचनात्मक परिप्रेक्ष्य में सीखना ज्ञान के निर्माण की एक प्रक्रिया है। विद्यार्थी सक्रिय रूप से पूर्व प्रचलित विचारों में उपलब्ध सामग्री/गतिविधियों के अनुसार अपने लिए ज्ञान की रचना करते हैं। बच्चों के संज्ञान

* *वरिष्ठ व्याख्याता*, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, जबलपुर

में उनके अध्यापकों की भूमिका विशेष महत्त्वपूर्ण है। प्रभावी शिक्षक ही इस ज्ञान की रचना में अपना सक्रिय योगदान दे सकता है।

प्रभावी शिक्षक तथा प्रभावी शिक्षण का स्वरूप क्या हो?

यह प्रश्न जितना पुरातन है उतना ही विवादास्पद भी रहा है। सामान्यतः यह कहा जा सकता है कि एक उत्साही, समर्पित और संवेदनशील व्यक्ति जो प्रत्येक बच्चे में निहित संभावनाओं को पूर्ण विस्तार दे सके, प्रभावी शिक्षक कहलाता है। इस शिक्षक द्वारा जो भी प्रयास संपादित किए जाते हैं प्रभावी शिक्षण का स्वरूप धारण करते हैं। सामान्यतः प्रभावी शिक्षण से आशय है —

- सीखने के अनुकूल माहौल जुटाना
- ज्ञान को साझे अनुभव के रूप में प्रस्तुत करना
- भाषा की समझ एवं दक्षता हासिल करना
- मूल्यांकन को सतत शैक्षिक प्रक्रिया मानना
- व्यावसायिक-उन्मुखीकरण का प्रयास
- बच्चों की आकांक्षाओं या क्षमताओं को समझकर तदनुरूप प्रयास करना
- बच्चों में विविध मूल्यों या कौशल का विकास करना
- बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रयास करना

इन समस्त स्थितियों को तभी विकसित किया जा सकता है जब एक शिक्षक एवं विद्यार्थी में प्रगाढ़ तादात्म्य स्थापित हो। यहाँ यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि कक्षा में संदेशों के आदान-प्रदान की एक दोषरहित और साझी प्रक्रिया की स्थापना हम सबका ध्येय है। वस्तुतः प्रभावी शिक्षण पूर्णरूपेण रचनात्मक अधिगम की अपेक्षा रखता है और रचनात्मक अधिगम के अंतर्गत संज्ञानात्मक-शिक्षार्जन, बहुविध-व्याख्या और बहुविध-अभिव्यक्तियों के लिए द्विमुखी शक्तिशाली संप्रेषण की तीव्र आवश्यकता महसूस की गई है।

संप्रेषण की चर्चा क्यों ?

कक्षा चाहे दूसरी हो या बारहवीं,बच्चे हों अथवा तरुण या किशोर ... यह सर्वविदित है कि आज के परिप्रेक्ष्य में लोगों में सुनने की दक्षता न्यून है। इसका कारण चाहे जो भी हो पर इतना अवश्य है कि हमें आज अपनी बात पहुँचाने के लिए कुछ कारगर कदम उठाने पड़ेंगे। हमारा चिरंतन लक्ष्य यही है कि विद्यार्थी द्वारा सुने गये अंश का अधिकतम प्रतिशत न केवल ग्रहण किया जा सके, अपितु चिरकाल तक मस्तिष्क में विद्यमान रहते हुए जीवन के व्यावहारिक क्षेत्र में प्रयोग में लाया जा सके। इससे संप्रेषण की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ जाती है। आज का बच्चा समर्पित श्रोता मात्र नहीं रहा बल्कि, संचार उपकरणों के आकर्षण-जाल में बँधा-बँधा सा हमारी कक्षा में प्रवेश करता है और इस बच्चे तक अपनी बात पहुँचाने के लिए हमें पूरी तैयारी के साथ कक्षा में प्रवेश करना ही होगा।

सामान्यतः संप्रेषण का व्यावहारिक कौशल निम्नलिखित स्थितियों पर निर्भर है—

- व्यक्ति की उपलब्धि उसकी संज्ञानात्मक दक्षता के अनुसार होती है।
- कार्यात्मकता का विस्तार होता है।
- प्रभावशीलता में वृद्धि होती है।
- संदर्भ के अनुकूल प्रस्तुति की जा सकती है।

वॉल्टन (1966) ने शिक्षण के चार सिद्धांत प्रतिपादित करते समय संप्रेषण सिद्धांत को विशेषतः

निरूपित किया है। विद्वानों का विचार है कि जो कुछ भी बाह्य ज्ञान बच्चे को दिया जाता है उसकी ग्रहणशीलता संप्रेषण पर ही अवलंबित है। इसका तात्पर्य यह है कि समुचित संप्रेषण पाठ को प्रभावी ही नहीं बनाता; वरन् उससे स्थायी स्मृति का विस्तार भी होता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि संप्रेषण एक प्रक्रिया होने के साथ-साथ एक सिद्धांत भी है। शिक्षकों, प्रशिक्षकों एवं छात्राध्यापकों में संप्रेषण दक्षता के विकास के लिए एक समन्वित प्रारूप विकसित करना आवश्यक है। ताकि उनके द्वारा हस्तांतरित किया गया ज्ञान अधिकांश प्रतिशत तक विद्यार्थियों या प्रशिक्षार्थियों तक पहुँच सके। वस्तुतः कक्षा-कक्ष प्रबंधन एक त्रिध्रुवी प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के दौरान संदेशों का आदान-प्रदान जितने अधिक प्रभावी ढंग से होगा वह उतना ही कारगर होगा। एक कक्षा-कक्ष औपचारिक संवादों के आदान-प्रदान पर निर्भर नहीं होता, बल्कि जीवंत संबंधों की स्थापना पर अवलंबित होता है जिसके अंतर्गत ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति, अभिप्रेरणा और संबंधित मानवीय व्यवहारों का सुधारात्मक प्रयास भी शामिल होता है। विद्यालयों या संस्थानों में इन जीवंत संबंधों की स्थापना के लिए उच्चारण, शब्द-चयन,प्रवाह,आवश्यक विराम, उतार-चढ़ाव, स्वर, प्रसन्नता, हावभाव, संकेत, बैठने या खड़े होने के ढंग,नवीन तकनीक के प्रयोग का औचित्य भी सिखाया जाता है जो सबसे अधिक आवश्यक है। यह औचित्य अनायास उत्पन्न नहीं होता। भारत के शिक्षकों को नवीन शिक्षण तकनीक की जानकारी देने के साथ-साथ संप्रेषण के सही तरीकों का अभ्यास करना हमारा ध्येय है। प्रभावी प्रशिक्षक या शिक्षक होने के लिए आवश्यक है कि संप्रेषण कौशल का विस्तार किया जाए।

जॉन डिवी के अनुसार संप्रेषण अनुभवों के आदान-प्रदान की वह प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप दोनों सहभागियों में लाभ के लिए परिवर्तन होता है।

वहीं एडगर डेल के अनुसार संप्रेषण ऐसी प्रक्रिया है जिसमें परस्पर लाभ के लिए विचारों तथा भावनाओं का आदान-प्रदान होता है।

कक्षा-शिक्षण में संप्रेषण की भूमिका

- विद्यार्थियों को ज्ञान का हस्तांतरण करने में सहायक
- विद्यार्थियों की अंतर्निहित रुचियों का विकास
- विद्यार्थियों की अवधारणात्मक समझ का विकास
- विद्यार्थियों की स्थायी स्मृति का विस्तार
- विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक
- शिक्षक-विद्यार्थी संबंध का प्रतिस्थापन
- विद्यार्थी-विद्यार्थी संबंधों को प्रगाढ़ बनाने में सहायक
- शालागत अंतरवैयक्तिक संबंधों का विकास

कक्षागत संप्रेषण के आधारभूत बिंदु

- शिक्षक को पर्याप्त विषय-वस्तु संबंधी ज्ञान होना चाहिए।
- पर्याप्त आत्मविश्वास आवश्यक है।
- भाषायी दक्षताएँ — श्रवण, वाचन, पठन, लेखन आदि में पटुता ज़रूरी है।
- कक्षाध्यापन में दृष्टांत, उदाहरण, तर्क, तथ्य आदि का प्रयोग करना आवश्यक है।
- शिक्षक के द्वारा समुचित प्रविधि का चयन किया गया हो।

- विषय-वस्तु का हावभाव या अभिनयात्मकता के द्वारा प्रस्तुतीकरण किया गया हो।
- भाव और संवेग का प्रयोग किया गया हो साथ ही साथ विषय-वस्तु विस्तार में उनका सहारा लिया गया हो।

संप्रेषण के तरीके

एक ऐसी क्रिया अथवा ढंग जिसके माध्यम से शिक्षक (सुविधादाता) अपनी सूचनाओं, विचारों युक्तियों और अभिवृत्तियों को विद्यार्थियों तक पहुँचाता है। इस प्रकार संप्रेषण के माध्यम निम्नलिखित हो सकते हैं—

- वाचिक (शब्द,विचार,मत,कथन,तर्क आदि)
- लिखित (लिखित सूचनाएँ,पत्र,कथा,प्रसंग आदि)
- आंगिक/सांकेतिक(भाव,मुद्रा,हस्त-संचालन, नेत्र-संकेत,खड़े होने का ढंग,संवेग,पैरों का संचालन)
- तकनीक-आधारित (टेलीफ़ोन, फ़ैक्स,मेल,मैसेज)

संप्रेषण दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच मौखिक, लिखित, सांकेतिक या प्रतीकात्मक माध्यम से विचार एवं सूचनाओं के प्रेषण की प्रक्रिया है। संप्रेषण हेतु संदेश का होना आवश्यक है। संप्रेषण में पहला पक्ष प्रेषक (संदेश भेजने वाला) तथा दूसरा पक्ष प्रेषणी (संदेश प्राप्तकर्ता) होता है। संप्रेषण उसी समय पूर्ण होता है जब संदेश मिल जाता है और उसकी स्वीकृति या प्रत्युत्तर दिया जाता है।

बोले गये संप्रेषण के पर्यायवाची के रूप में मौखिक संप्रेषण प्रयोग नहीं करते। अतएव, मौखिक ध्वनियाँ जो कि शब्द नहीं मानी जातीं, जैसे कि घुरघुराना या शब्दरहित गायन या गुनगुनाना आदि अशाब्दिक हैं। संकेत भाषा तथा लेखन को सामान्यतः शाब्दिक संप्रेषण का रूप माना जाता है, क्योंकि दोनों में शब्दों का इस्तेमाल होता है। यद्यपि वाणी की तरह दोनों में पैराभाषीय तत्व हो सकते हैं एवं जो प्रायःअशाब्दिक संदेशों में दिखलायी देते हैं। अशाब्दिक संप्रेषण किसी भी माध्यम द्वारा हो सकता है। अशाब्दिक संप्रेषण (non-verbal communication) से तात्पर्य सामान्यतः शब्द रहित संदेशों को भेजने एवं प्राप्त करने की संप्रेषण प्रक्रिया से है। अर्थात् भाषा ही संप्रेषण का एकमात्र माध्यम नहीं है, कुछ अन्य माध्यम भी हैं। इस प्रकार के संप्रेषण के लिए 'अवाचिक संप्रेषण','वाचेतर संपेप्रण','अशाब्दिक संचार'आदि शब्दों का भी प्रयोग होता है।

क्या संप्रेषणशीलता विकसित की जा सकती है?

सन्1969 में आर्गेल (Argyle) ने स्पष्ट किया कि संप्रेषण कौशल का विकास अन्य क्रियाओं की भाँति योजनाबद्ध रूप से किया जा सकता है। उनके अनुसार, यह एक सुसंगठित और समन्वित गतिविधि है जिसका विकास किया जा सकता है और जो श्रृंखलाबद्ध रूप में संवेदनात्मक, स्नायविक और क्रियात्मक यंत्र रचना के रूप में प्रकट होती है।

आर्गेल का मॉडल

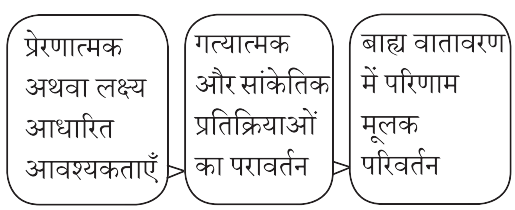

इसके अतिरिक्त प्रभावशाली संप्रेषण हेतु स्वतंत्र व्यावहारिक प्रयास के क्षेत्र इस प्रकार हो सकते हैं — उच्चारण, शब्द-चयन, प्रवाह, आवश्यक विराम, उतार-चढ़ाव, स्वर, प्रसन्नता, हावभाव, संकेत, बैठने या खड़े होने के ढंग का नियमित रूप से अभ्यास करना आवश्यक है।

रुबिन (Rubin) का विचार इनसे भिन्न नहीं है। उन्होंने संप्रेषणात्मक सक्षमता और कौशल को निम्नलिखित क्षेत्रों से संबंधित माना है (चित्र देखें)। एक संप्रेषणशील व्यक्ति कुछ गुणों के आधार पर पहचाना जा सकता है और संभवतः सतत प्रयत्न एवं अभ्यास के द्वारा इन्हीं गुणों को विकसित कर किसी व्यक्ति में संप्रेषण की शक्ति का विकास किया जा सकता है —

हार्गी आदि (1981) ने संप्रेषण संबंध कौशल की कसौटी निर्धारित करने की चेष्टा कुछ परिस्थितियों के आधार पर की है। अगर व्यावहारिक रूप में समझा जाए तो उनके अनुसार सूचनाओं या ज्ञान को अधिकाधिक प्रतिशत तक ग्रहणकर्ता (बालक) तक पहुँचाना ही संप्रेषण है। उन्होंने इसके लिए निम्नलिखित संसूचक निर्धारित किए हैं—

- अशाब्दिक संपर्क — सामान्यतः विद्यार्थी हाव-भाव, सिर हिलाने या आँखों के संकेत के माध्यम से प्रेरित हो सकते हैं।
- पुनर्बलन — यह क्रिया पाठ का मंतव्य सभी बच्चों तक पहुँचाने में सहायक होती है।
- प्रतिक्रिया — पाठ के संदर्भ में प्रतिक्रियाओं को आमंत्रित किया जाए एवं उनका सही समाधान

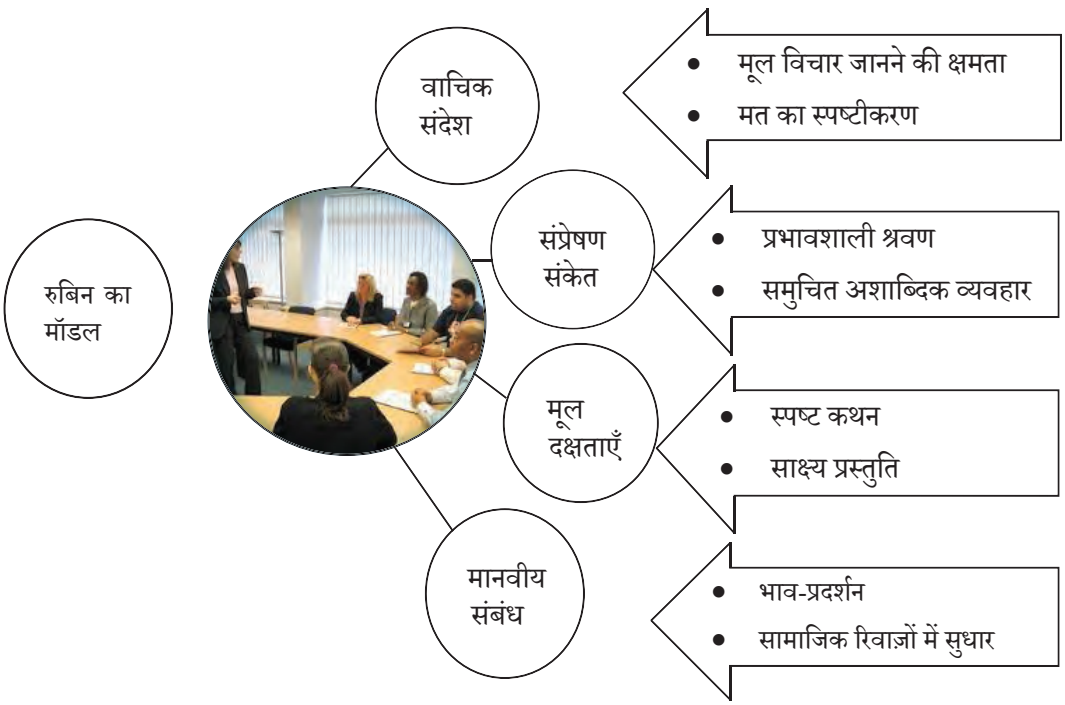

किया जाए तो उनका स्थायी-स्मृति विस्तार संभव हो सकेगा।

- भूमिका निर्धारण — एक अच्छा शिक्षक पूर्व से ही यह सुनिश्चित कर लेता है कि किस गतिविधि के संदर्भ में उसकी भूमिका क्या एवं किस प्रकार की होगी एवं उसे किस प्रकार कार्य रूप में परिणत किया जा सकता है।
- घनिष्ठता — यदि शिक्षक-छात्र संबंधों में घनिष्ठता हो तो वह संप्रेषण को काफ़ी हद तक प्रभावित करती है और उसका अनुकूल प्रभाव पड़ता है।
- व्याख्या — संबंधित पदों की आवश्यकतानुरूप व्याख्या करना समय-समय पर आवश्यक हो जाता है, ताकि विद्यार्थियों की विषयवस्तु के संबंध में स्थायी और स्पष्ट धारणा बन सके।
- अवधान खींचना — कुछ विशेष शब्द, क्रियाएँ, संकेत या उदाहरण प्रस्तुत किए जाने आवश्यक हैं, जो ध्यानाकर्षण में सहायक हों और पाठ का प्रभाव बढ़ाने में कारगर साबित हो सकें।
- व्यक्तिगत विचार- विमर्श — आवश्यकतानुसार विचार-विमर्श न केवल विद्यार्थियों की रुचि का विस्तार करता है, बल्कि पाठ को प्रभावी भी बनाता है।
- समस्या प्रकटीकरण — कोई भी पाठ जो समस्या के रूप में प्रस्तुत किया गया हो और समाधान के एक अंश के रूप में आगे बढ़ाया गया हो, सदैव प्रभावकारी सिद्ध होता है।
- संप्रेषण कौशल का विकास — यह एक समन्वित प्रक्रिया है जिसमें विषयवस्तु संबंधी ज्ञान, अभिव्यक्ति कौशल, हाव-भाव और व्यक्तित्व की प्रभावशीलता संप्रेषण के लिए अत्यावश्यक है। संप्रेषण कौशल का विकास करने के लिए एक सोची समझी रणनीति के तहत प्रयास करना आवश्यक है। जो मूलभूत दक्षताओं पर आधारित है—

  श्रवण

  वाचन

  पठन

  लेखन

सन् 1971 में एम.हिल्दर्ब्रंड ने संप्रेषण कौशल के विकास के लिए जिन तरीकों या प्रयासों का उल्लेख किया है उनका प्रयोग प्रभावी संप्रेषण के लिए आवश्यक है।

संगठन और स्पष्टता प्रस्तुतीकरण में स्पष्टता लाने के लिए निम्न बिंदु अपेक्षित हैं —

- पाठ की विधिवत पूर्व-तैयारी करना आवश्यक है अर्थात् उस पाठ से संबंधित सभी तथ्यों, जानकारियों एवं आवश्यक सामग्री को पहले से ही जुटा लिया जाए।
- कठिन अंश का सरलीकरण करने के लिए कक्षाध्यापन में दृष्टांत, उदाहरण, तर्क, तथ्य आदि का प्रयोग करना आवश्यक है।
- विषय-वस्तु विस्तार के विभिन्न तरीके कभी-कभी दुरूह मालूम पड़ते हैं इन स्थितियों में व्यावहारिक उदाहरण देकर प्रश्न पूछते हुए आसानी से आगे बढ़ा जा सकता है।
- समय-समय पर आवश्यक सहायक-सामग्री का प्रयोग करना आवश्यक है।
- संपूर्ण पाठ योजना शिक्षण प्रतिमानों को ध्यान में रखकर बनाई गई हो।

- पाठ्यांश को स्मरणीय बनाने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि जो कुछ भी प्रस्तुत किया जाए उसमें व्यवहारिक क्षेत्र के जीवंत उदाहरणों को शामिल किया गया हो।

विश्लेषण

कक्षा-कक्ष अंतःक्रिया में विश्लेषण और विमर्श का विशेष महत्त्व है जिसके लिए आवश्यक है —

- विषय या क्षेत्र पर अधिकार या अनायास ही नहीं आ जाता इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक संबंधित अंशों के बारे में सभी उपलब्ध स्रोतों के माध्यम से अध्ययन करें। इस सबके लिए स्वाध्याय की एक लंबी परंपरा अपेक्षित है।
- विषयवस्तु को ग्राह्य बनाने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक स्वतः ही शिक्षण में आनंद का अनुभव करें।
- कक्षा-कक्ष प्रबंधन में गत्यात्मकता का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है। कुर्सी पर लगातार बैठे या स्थिर खड़े हुए शिक्षक और बेंचों पर बँधे हुए विद्यार्थियों में संप्रेषण की मात्रा कम ही होती है।
- प्रेमपूर्ण व्यवहार प्रस्तुत की गई विषयवस्तु को प्रभावशाली बना देता है। यद्यपि अनेक मनोवैज्ञानिकों ने तथ्यों की प्रभावात्मकता बढ़ाने के लिए नकारात्मक व्यवहार का प्रभाव देखने की कोशिश भी की है।
- आवश्यकतानुसार संकेत या हावभाव आदि का प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है।

प्रायोजित संप्रेषण कौशल विकास

प्रायोजित संप्रेषण कौशल विकास के अंतर्गत संदर्शक पूर्वयोजना के अनुसार संप्रेषण विकास का प्रयास कर सकते हैं, जैसे — कुछ गपशप के क्षण या कोई भूमिका के लिए प्रेरित करना।

(क) संदर्शक या समूह अंतःक्रिया

प्रेरक जब समूह को किसी अंत: क्रिया के द्वारा प्रेरित करता है।

- उद्दीपक-आधारित कथोपकथन — एक विषय, वस्तु या स्थिति को उद्दीपन हेतु प्रस्तुत कर संप्रेषण का माध्यम बनाया जा सकता है।
- प्रत्यक्ष या क्रम अंतःक्रिया — उसी समय उपस्थित प्रत्यक्ष पदार्थों या स्थिति का क्रमिक विश्लेषण करने की ओर प्रेरित करना।
- साहस बढाना या स्वीकारोक्ति — संप्रेषण कौशल विकास के लिए संदर्शक के प्रेरणादायक वाक्यों के साथ-साथ स्वीकारोक्ति भी कभी-कभी आवश्यक हो जाती है, जैसे यह कहा जाए कि कभी-कभी मैं अपनी बात स्पष्ट नहीं कर पाता है।
- चातुर्य या प्रेरणा — प्रेरणादायक बातों द्वारा प्रोत्साहित करते हैं।
- आलोचना या अफवाह — तत्कालीन कथन/स्थिति का विचार करना।

(ख)संदर्शक या व्यक्तिगत या शिक्षार्थी अंतःक्रिया

संदर्शक अपने समूह के साथ अंत क्रिया करते हुए कुछ कथनों या उपकथनों के माध्यम से मूल्यांकन करने के बाद प्रोत्साहित करते हैं।

- स्पष्ट मूल्यांकन प्रविधि — शिक्षार्थियों को स्पष्ट सुझाव दिए गए हों और बीच-बीच में गतिविधि द्वारा मूल्यांकन भी किया जाए जैसे समूहों में विषय विशेष पर परिचर्चा करवाने के बाद समूहवार प्रस्तुतीकरण एवं मूल्यांकन हो।

- स्रोत खोजना या सुधार के सुझाव — संदर्शक किसी वक्ता या संवादाता का उदाहरण देकर उनकी शैली की समालोचना करते हुए सुधार हेतु प्रेरित कर सकते हैं। इस प्रकार भी उदाहरण दे सकते हैं कि अमुक व्यक्ति के बोले गए वाक्य में भी प्रभाव तो है, लेकिन वह वाक्य के अंतिम पद धीरे से बोलता है आदि।

एक संस्थान में प्रशिक्षक की देखरेख में संप्रेषण कौशल विस्तार प्रक्रिया को कैसे संपादित किया जाए। यह क्रमशः नीचे दिए गए चित्र के माध्यम से समझा जा सकता है —

आर्गेल का मॉडल

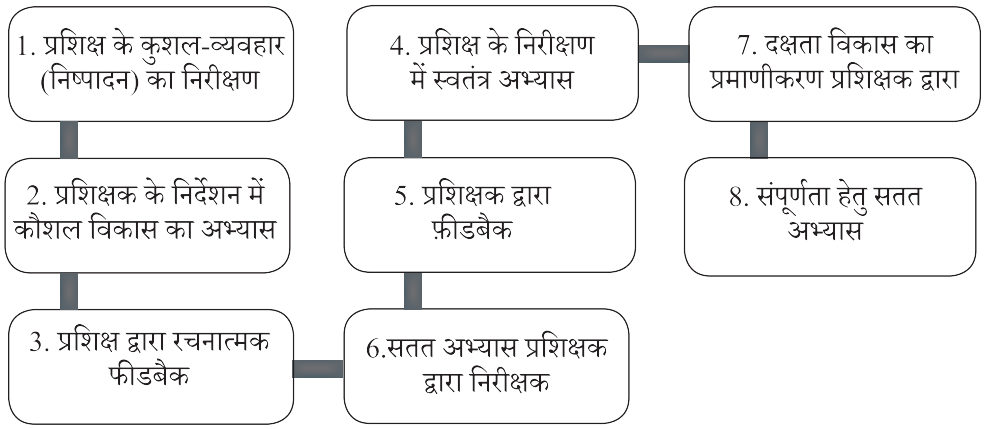

इसके अतिरिक्त प्रभावशाली संप्रेषण हेतु स्वतंत्र व्यावहारिक प्रयास के क्षेत्र उच्चारण, शब्द-चयन, प्रवाह, आवश्यक विराम, उतार-चढ़ाव, स्वर, प्रसन्नता, हावभाव, संकेत, बैठने/खड़े होने के ढंग का नियमित रूप से अभ्यास करना आदि क्षेत्र हो सकते हैं।

निष्कर्ष

शिक्षा के क्षेत्र में नूतन प्रयोग युग की माँग है। आज का बच्चा अब मात्र कोरी स्लेट नहीं वरन् एक जिज्ञासु मनुष्य है जिसने संचार माध्यमों के आकर्षण का भली-भाँति अनुभव कर लिया है। इस बच्चे के विकास की बागडोर प्रभावी शिक्षकों के हाथों में ही सौंपी जा सकती है।

यदि भली-भाँति संप्रेषण हो तो संभवतः शिक्षण भी प्रभावी हो सकेगा। एक कक्षा-कक्ष औपचारिक संवादों के आदान-प्रदान पर निर्भर नहीं होता, बल्कि जीवंत संबंधों की स्थापना पर अवलंबित होता है। जिसके अंतर्गत ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति, अभिप्रेरणा और संबंधित मानवीय व्यवहारों के सुधारात्मक प्रयास भी शामिल होते हैं। विद्यालयों या संस्थानों में इन जीवंत संबंधों की स्थापना के लिए उच्चारण, शब्द चयन, प्रवाह, आवश्यक विराम, उतार-चढाव, स्वर, प्रसन्नता, हावभाव, संकेत, बैठने या खड़े होने के ढंग, नवीन तकनीक के प्रयोग का औचित्य भी सिखाया जाता है जो सबसे अधिक आवश्यक है। यह औचित्य अनायास उत्पन्न नहीं होता। भारत के शिक्षकों को नवीन शिक्षण तकनीक की जानकारी देने के साथ-साथ संप्रेषण के सही तरीकों का अभ्यास करना हमारा ध्येय है।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

जोन,एडेअर. 2010. *ट्रेनिंग फ़ॉर कम्युनिकेशन*.मैरूडोनाल्ड, लंदन.

तिवारी, एन.वी. 1995. *ए ट्रेनिंग पैकेज ऑन डेवलपिंग कम्युनिकेशन* स्किल. टी.टी.आई, भोपाल.

बरलो, डी.के. 2001.*दी प्रोसेस कम्युनिकेशन — एन इंट्रोडक्शन टू थ्योरी एंड प्रैक्टिस*. रीनेहार्ट प्रेस, सैन फ्रांसिस्को.

भटनागर,ए. बी., मीनाक्षी भटनागर और अनुराग भटनागर. 2014. *अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया*. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, उत्तर प्रदेश.